सामाजिक विज्ञान

(भूगोल)

अध्याय-6: पृथ्वी के प्रमुख स्थलरूप

SHIVOM CLASSES 8696608541

पृथ्वी के प्रमुख स्थलरूप

पृथ्वी की सतह सभी जगह एकसमान नहीं है। पृथ्वी पर अनगिनत प्रकार के स्थलरूप हैं। स्थलमंडल के कुछ भाग ऊँचे-नीचे तथा कुछ समतल होते हैं।

ये स्थलरूप दो प्रक्रियाओं के परिणाम स्वरूप बनते हैं।

प्रथम या आंतरिक प्रक्रिया के कारण बहुत से स्थानों पर पृथ्वी की सतह कहीं ऊपर उठ जाती है तो कही धँस जाती है।

दूसरी या बाह्य प्रक्रिया स्थल के लगातार बनने एवं टूटने की प्रक्रिया है। पृथ्वी की सतह के टूटकर घिस जाने को अपरदन कहते हैं। अपरदन की क्रिया के द्वारा सतह नीची हो जाती है तथा निक्षेपण की प्रक्रिया के द्वारा इनका फिर से निर्माण होता हैं।

पर्वत-

पर्वत पृथ्वी की सतह की प्राकृतिक ऊँचाई है। पर्वत का शिखर छोटा तथा आधार चौड़ा होता है। यह आस-पास के क्षेत्र से बहुत ऊँचा होता है। कुछ पहाड़ बादलो से भी ऊँचे होते हैं। जैसे-जैसे आप ऊँचाई पर जाएँगे जलवायु ठंडी होती जाती है। कुछ पर्वतों पर हमेशा जमी रहने वाले बर्फ की नदियां होती है जिसे हिमानी कहते हैं। यहां कुछ ऐसे पर्वत भी होते हैं जो समुद्र के भीतर होते हैं तथा जिन्हें आप नहीं देख सकते हैं। कठोर जलवायु होने के कारण पर्वतीय क्षेत्रों में बहुत कम लोग निवास करते हैं। वहां का धरातल खड़ी ढाल होता है तथा कृषि योग्य भूमि की कमी होती है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

पर्वत को दो मुख्य भागों में बांटा गया है

1. प्राचीन पर्वत (Old Mountains)
2. नूतन पर्वत (Young Mountains)

1. **प्राचीन पर्वत (Old Mountains) :-** जिस पर्वत का निर्माण तीन करोड़ वर्ष पहले महाद्वीपीय विस्थापन युग से पहले हुआ हो उसे प्राचीन पर्वत कहते हैं जैसे :- पेनाईन (यूरोप), अल्पेशियन (अमेरिका), अरावली (भारत)

2. **नूतन पर्वत (Young Mountains) :-** जिस पर्वत का निर्माण तृतीय युग में प्लेटो के अभिसरण से हुआ है उन्हें नवीन वलित पर्वत कहते हैं जैसे :- हिमालय, रॉकी, इंडीज, आल्पस आदि

हिमानी

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

कुछ पर्वतों पर हमेशा जमी रहने वाली बर्फ की नदियाँ होती हैं। श्रंखला :- पर्वत एक रेखा के कर्म में भी व्यवस्थित हो सकते हैं जिसे श्रंखला कहा जाता है। ये सैकड़ो किमी. में फैले होते हैं।

हिमालय, आल्प्स तथा एंडीज क्रमश: एशिया , यूरोप तथा दक्षिण अमेरिका की पर्वत श्रंखलाएँ हैं। पर्वतों की ऊँचाई एवं आकार में भिन्नता होती है।

हिमानी या हिमनद बड़े बड़े हिमखंडों को कहते हैं जो अपने ही भार के कारण नीचे की ओर खिसकते रहते हैं। नदी और हिमनद में इतना अंतर है कि नदी में जल ढलान की ओर बहता है और हिमनद में हिम नीचे की ओर खिसकता है। हिमनद बर्फ़ का एक विशाल संग्रह होता है, जो निम्न भूमि की ओर धीरे-धीरे बढ़ता है।

1) **हिमालय तथा आल्प्स वलित पर्वत :-** जिनकी सतह उबड़-खाबड़ तथा शिखर शंक्वाकार है। भारत की अरावली श्रंखला विश्व की सबसे पुरानी वलित पर्वत श्रंखला है।
2) **भ्रंशोत्थ पर्वत :-** जब बहुत बड़ा भाग टूट जाता है तथा ऊर्ध्वाधर रूप से विस्थापित हो जाता है तब भ्रंशोत्थ पर्वतों का निर्माण होता है। यूरोप की राईन घाटी तथा वॉसजेस पर्वत इस तरह के पर्वत तंत्र के उदाहरण हैं।
3) **ज्वालामुखी पर्वत :-** ज्वालामुखी क्रियाओं के कारण बनते हैं। अफ्रीका का माउंट किलिमंजारो तथा जापान का फ्यूजियमा इस तरह के पर्वतों के उदाहरण है।

पठार-

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

ठार धरातल काव्य स्थान जहां की आसपास की जमीन पर्याप्त ऊंची होती है जिस का ऊपरी भाग चौड़ा सपाट हो, उसे पठार कहते हैं। पठार चारों ओर से पर्वतों से गिरे हुए होते हैं, भौगोलिक स्थिति के आधार पठारो को तीन भागों में बांटा गया है। जैसे-तिब्बत का पठार, पेटागोनिया का पठार, और दक्षिण भारत का पठार है। यह काफी विस्तृत और प्राचीन पठार है, पठार पृथ्वी स्थल भाग के एक तिहाई पर विस्तृत है। पठानों का ऊपरी भाग चपटा होता है, पठानों के निर्धारण में उसकी ऊंचाई से अधिक मैं तो उसके चपटे होने का है। विश्व का सबसे विस्तृत पठार तिब्बत का पठार है, यह जो पठार होते हैं वह एक तरफ बड़े-बड़े पर्वतों से गिरे होते हैं, और दूसरी ओर समुद्र या मैदान से गिरे होते है। उदाहरण के लिए अमेरिका के पेटागोनिया पठार है, भारत का सबसे ऊंचा पठार दक्कन है। भारत के सबसे ऊंचे पठार को प्रायद्वीपीय पठार आ जाता है, यह बेहद ही विशाल पठार है, उठी हुई एवं सपात भूमि होती है। इसका ऊपरी भाग मेज के समान सपात होता है। पठारों की ऊँचाई प्राय: कुछ सौ मीटर से लेकर कई हजार मीटर तक हो सकती है। पठार नये या पुराने हो सकते हैं। भारत में दक्क्न पठार, केन्या में तंजानिया तथा पूर्वी अफ्रीका का युगांडा।

तिब्बत का पठार विश्व का सबसे ऊँचा पठार है जिसकी ऊँचाई माध्य समुद्र तल से 4,000 से 6,000 मीटर तक है।

अफ्रीका का पठार सोना एवं हीरों के खनन के लिए प्रसिद्ध है।

भारत में छोटानागपुर के पठार में लोहा , कोयला , तथा मैंगनीज के बहुत बड़े भंडार पाए जाते हैं।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

प्रशांत महासागर में स्थित मॉनाकी पर्वत (हवाई द्वीप) सागर की सतह के निचे स्थित है। इसकी ऊँचाई (10,205 मीटर)एवरेस्ट शिखर से भी अधिक है।.

पठार के प्रकार-

1. अन्तरा पर्वतीय पठार
2. गिरिपद पठार,
3. महाद्वीपीय पठार।

1. **अन्तरा पर्वतीय पठार -** चारों ओर से ऊँची पर्वत श्रेणियों से पूरी तरह या आंशिक रूप से घिरे भू-भाग को अन्तरा पर्वतीय पठार कहते हैं। उध्वाधर हलचलें लगभग क्षैतिज संस्तरों वाली शैलों के बहुत बड़े भूभाग को समुद्रतल से हजारों मीटर ऊँचा उठा देती है। संसार के अधिकांश ऊँचे पठार इसी श्रेणी में आते हैं। इनकी औसत ऊँचाई 3000 मीटर है। तिब्बत का विस्तृत एवं 4500 मीटर ऊँचा यह वलित पर्वत जैसे हिमालय, काराकोरम, क्यूनलुन, तियनशान से दो ओर से घिरा हुआ है। कोलोरेडो दूसरा चिर परिचित उदाहरण है जो एक किलोमीटर से अधिक ऊँचा है, जिसे नदियों ने ग्राँड केनियन तथा अन्य महाखड्डों को काटकर बना दिया है। मेक्सिको, बोलीविया, ईरान और हंगरी इसी प्रकार के पठार के अन्य उदाहरण है।

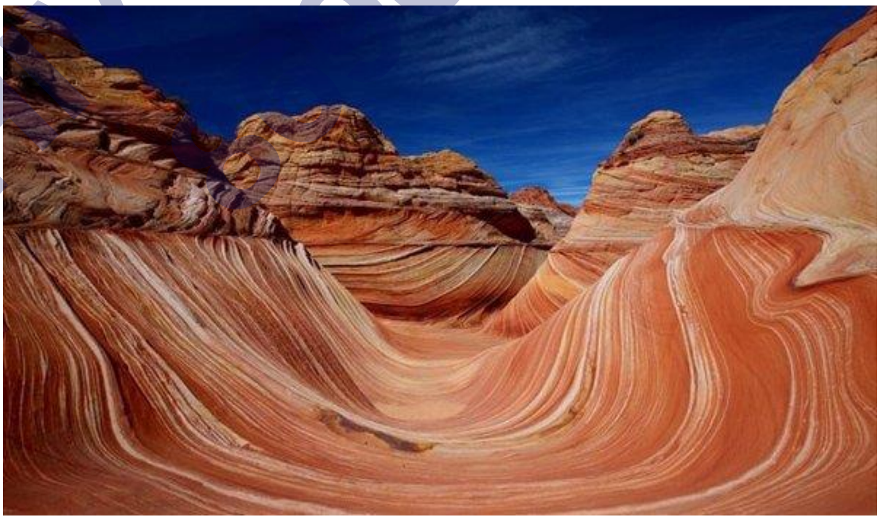

2. **गिरिपद (पीडमान्ट) पठार -** पर्वत के पदों में स्थित अथवा पर्वतमाला से जुड़े हुए पठारों को जिनके दूसरी ओर मैदान या समुद्र हों, गिरिपद पठार कहते हैं। इन पठारों का क्षेत्रफल प्राय: कम होता है। इन पठारों का निर्माण कठोर शैलों से होता है। भारत में मालवा पठार,

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

दक्षिण अमेरिका में पैटेगोनिया का पठार जिसके एक ओर अटलांटिक महासागर है और संयुक्त राज्य अमेरिका में एप्लेशियन पर्वत और अटलांटिक तटीय मैदान के बीच एप्लेशियन पठार इसके उदाहरण हैं। ये किसी समय बहुत ऊँचे थे परन्तु अब अपरदन के बहुत से कारकों द्वारा घिस दिए गए हैं। इसी कारणवश इन्हें अपरदन के पठार भी कहा जाता है।

3. **महाद्वीपीय पठार -** धरातल के एक बहुत बड़े भाग के ऊपर उठने या बड़े भू-भाग पर लावा की परतों के काफी ऊँचाई तक जाने से महाद्वीपीय पठारो का निर्माण होता है। महाराष्ट्र का लावा पठार, उत्तर-पश्चिम संयुक्त राज्य अमेरिका में स्नेक नदी पठार, इस प्रकार के पठारों के उदाहरण हैं। इनको निक्षेपण के पठार भी कहते हैं। महाद्वीपीय पठार अपने आस-पास के क्षेत्रों तथा समुद्र तल से स्पष्ट ऊँचे उठे दिखते हैं। इस प्रकार के पठारों का विस्तार सबसे अधिक है। भारत का विशाल पठार, ब्राजील का पठार, अरब का पठार, स्पेन, ग्रीनलैण्ड और अंटार्कटिका के पठार, अफ्रीका तथा आस्ट्रेलिया के पठार महाद्वीपीय पठारों के उदाहरण हैं।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

मैदान-

धरातल पर पायी जाने वाली समस्त स्थलाकृतियों में मैदान सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। अति मंद ढाल वाली लगभग सपाट या लहरिया निम्न भूमि को मैदान कहते हैं। मैदान धरातल के लगभग 55 प्रतिशत भाग पर फैले हुए हैं। संसार के अधिकांश मैदान नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी से बने हैं। नदियों के अलावा कुछ मैदानों का निर्माण वायु, ज्वालामुखी और हिमानी द्वारा भी होता है।

मैदान समतल भूमि के बहुत बड़े भाग होते हैं। वे सामान्यत: माध्य समुद्री तल से 200 मीटर से अधिक ऊँचे नहीं होते हैं। अधिकांश मैदान नदियों तथा उनकी सहायक नदियों के द्वारा बने हैं।

एशिया में स्थित भारत में गंगा का मैदान प्रमुख उदाहरण है। मनुष्य के रहने, खेती, के लिए उपयोगी है।

स्थिति के आधार पर मैदानों का वर्गीकरण

मैदान के प्रकार

1. संरचनात्मक मैदान
2. अपरदन द्वारा बने मैदान
3. निक्षेपण द्वारा बने मैदान

1. संरचनात्मक मैदान

इन मैदानों का निर्माण मुख्यत: सागरीय तल अर्थात् महाद्वीपीय निमग्न तट के उत्थान के कारण होता है। ऐसे मैदान प्राय: सभी महाद्वीपों के किनारों पर मिलते हैं। मैक्सिको की

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

खाड़ी के सहारे फैला संयुक्त राज्य अमेरिका का दक्षिणी पूर्वी मैदान इसका उदाहरण है। भूमि के नीचे धंसने के कारण भी संरचनात्मक मैदानों का निर्माण होता है। आस्ट्रेलिया के मध्यवर्ती मैदान का निर्माण इसी प्रकार हुआ है।

2. अपरदन द्वारा बने मैदान-

पृथ्वी के धरातल पर निरन्तर अपरदन की प्रक्रिया चलती रहती है, जिससे दीर्घकाल में पर्वत तथा पठार नदी, पवन और हिमानी जैसे कारकों द्वारा घिस कर मैदानों में परिणत हो जाते हैं। इस प्रकार बने मैदान पूर्णत: समतल नहीं होते। कठोर शैलों के टीले बीच-बीच में खड़े रहते हैं। उत्तरी कनाडा एवं पश्चिमी साइबेरिया का मैदान अपरदन द्वारा बने मैदान हैं। अपरदन द्वारा बने मैदानों को समप्राय भूमि/पेनीप्लेन भी कहते हैं।

3. निक्षेपण द्वारा बने मैदान

ऐसे मैदानों का निर्माण नदी, हिमानी, पवन आदि तथा संतुलन के कारकों द्वारा ढोये अवसादों से झील या समुद्र जैसे गर्तों के भरने से होता है। जब मैदानों का निर्माण नदी द्वारा ढोये गये अवसादों के निक्षेपण से होता है तो उसे नदीकृत या जलोढ़ मैदान कहते हैं। भारतीय उपमहाद्वीप का सिन्धु-गंगा का मैदान, उत्तरी चीन में गहो का मैदान, इटली में पो नदी द्वारा बना लोम्बार्डी का मैदान और बाँग्लादेश का गंगा ब्रह्मपुत्रा का डेल्टाई मैदान जलोढ़ मैदानों के विशिष्ट उदाहरण हैं। जब मैदानों का निर्माण झील में अवसादों के निक्षेपण से होता है तो उसे सरोवरी या झील मैदान कहते हैं। कश्मीर और मणिपुर की घाटियाँ भारत में सरोवरी मैदानों के उदाहरण हैं। जब मैदान का निर्माण हिमानी द्वारा ढोये पदार्थों के निक्षेपण से होता है तो उसे हिमानी कृत या हिमोढ़ मैदान कहते हैं। कनाडा और उत्तरी-पश्चिमी यूरोप के मैदान हिमानी कृत मैदानों के उदाहरण हैं।

जब निक्षेपण का प्रमुख कारक पवन होती है तो लोयस मैदान बनते हैं। उत्तरी-पश्चिमी चीन के लोयस मैदान का निर्माण पवन द्वारा उड़ाकर लाये गए सूक्ष्म धूल कण के निक्षेपण से हुआ है।.

मैदानों का आर्थिक महत्व-

SHIVOM CLASSES 8696608541
SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

मैदानों ने मानव जीवन को इस प्रकार से प्रभावित किया है:

1. **उपजाऊ मृदा -** मैदानों की मृदा सबसे अधिक उपजाऊ तथा गहरी होती है। समतल होने के कारण सिंचाई के साधनों का पर्याप्त विकास हुआ है। इन दोनों के कारण मैदानों में कृषि सर्वाधिक विकसित है। इसीलिये मैदानों को 'संसार का अन्न भंडार' कहा जाता है।
2. **उद्योगों का विकास -** समतल, उपजाऊ एवं सिंचाई की सुविधाओं के कारण मैदानों में कृषि प्रधान उद्योगों का विकास हुआ है। जिससे लोगों को रोजगार मिलता है तथा राष्ट्रीय उत्पादन तथा प्रति व्यक्ति आय बढ़ती है। अधिक जनसंख्या के कारण कृषि तथा उद्योगों के लिए सस्ते श्रमिक मिल जाते हैं। (3) यातायात की सुविधा - मैदानों का तल समतल होने के कारण यहाँ आवागमन के साधनों - रेलमार्गों, सड़को, हवाई अड्डों आदि का बनाना सुविधाजनक होता है।
3. **सभ्यताओं के केन्द्र -** मैदान प्राचीन एवं आधुनिक सभ्यताओं के केन्द्र हैं। विश्व की प्रमुख नदी घाटी सभ्यताओं का उद्भव मैदानों में ही हुआ है। सिंधु घाटी की सभ्यता और नील घाटी सभ्यता इसके उदाहरण हैं।
4. **नगरों की सभ्यता -** रेल, सड़क तथा नदियों द्वारा यातायात की सुविधाओं तथा कृषि और उद्योगों के विकास ने नगरों की स्थापना और विकास को प्रोत्साहित किया। मैदानों में विश्व के सबसे विकसित व्यापारिक नगर और पत्तन स्थित हैं। रोम, टोकियों, कोलकाता, यंगून (रंगून), कानपुर तथा पेरिस आदि नगर मैदानों में ही स्थित हैं।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 48)

प्रश्न 1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए

1. प्रमुख स्थलरूप कौन-कौन से हैं ?
2. पर्वत एवं पठार में क्या अंतर है ?
3. पर्वतों के विभिन्न प्रकार कौन-कौन से हैं ?
4. मनुष्यों के लिए पर्वत किस प्रकार उपयोगी हैं ?
5. मैदानों का निर्माण किस प्रकार होता है ?
6. नदियों द्वारा निर्मित मैदान सघन जनसंख्या वाले होते हैं, क्यों ?
7. पर्वतों में जनसंख्या कम होती है, क्यों ?

उत्तर –

1. पर्वत, पठार तथा मैदान प्रमुख स्थलरूप हैं।
2.

पर्वत	पठार
पर्वत का शिखर छोटा तथा आधार चौड़ा होता है यह आसपास के क्षेत्र से बहुत ऊंचा होता है। वहां का धरातल खड़ी ढाल वाला होता है तथा कृषि योग्य भूमि की कमी होती है।	पठार उठी हुई एवं सपाट भूमि होती है। यह आसपास के क्षेत्रों से अधिक उठा हुआ होता है तथा इसके ऊपरी भाग मेज के समान सपाट होती है।

3. पर्वत मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं- वलित पर्वत, भ्रंशोत्थ पर्वत तथा ज्वालामुखी पर्वत।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

4. मनुष्यों के लिए पर्वत कई प्रकार से उपयोगी हैं
    - पर्वत जल के संग्रहागार होते हैं। बहुत सी नदियों का स्त्रोत पर्वतों में स्थिति हिमानियों में होता है।
    - पर्वतों के जल का उपयोग सिंचाई तथा बिजली के उत्पादन में भी किया जाता है।
    - पर्वतों में अलग-अलग प्रकार की वनस्पति या तथा जीव जंतु पाए जाते हैं।
    - सैलानियों के लिए पर्वत की यात्रा उपयुक्त स्थान है। वे पर्वतों की यात्रा उन की प्राकृतिक सुंदरता को देखने के लिए करते हैं।
    - विभिन्न प्रकार के खेल; जैसे – पैराग्लाइडिंग, हैंग ग्लाइडिंग, रिवर राफ्टिंग तथा स्कीइंग पर्वतों के प्रचलित खेल है।
5. नदियां पर्वतों के ढालों पर नीचे की ओर बहती हैं तथा उन्हें अपरदित कर देती हैं। वे अपरदित पदार्थों को अपने साथ आगे की ओर ले जाती हैं। अपने साथ ले जाने वाले पदार्थ; जैसे – पत्थर, बालू तथा सिल्ट को वे घाटियों में निक्षेपित कर देती है। इन्ही निक्षेपों से मैदानों का निर्माण होता है।
6. नदियों द्वारा निर्मित मैदान सघन जनसंख्या वाले होते हैं क्योंकि
    - समतल भूमि पर मकानों का निर्माण करना सरल होता है।
    - इन मैदानों की भूमि समतल तथा उपजाऊ होती है। यहां कृषि करना सरल होता है।
    - यहां यातायात के साधन विकसित होते हैं।
7. पर्वतों में जनसंख्या निम्नलिखित कारणों से कम होती है
    - ऊबड़-खाबड़ भूमि तथा कठोर जलवायु के कारण यहां का जीवन कठिन होता है।
    - यहां यातायात के साधनों का अभाव होता है।
    - खड़ी ढालों के कारण पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि करना सरल नहीं है।
    - पर्वतों में घर बनाना या सड़के बनाना बहुत अधिक कठिन होता है।

प्रश्न 2 सही उत्तर पर चिह्नित (✓) कीजिए ।

1. पर्वत पठारों से भिन्न होते है –

    (क) ऊंचाई

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

(ख) ढाल

(ग) अभिमुखता।

2. हिमानी कहां पाई जाती है ?

(क) पर्वतों में,

(ख) मैदानों में,

(ग) पठारों में ।

3. दक्कन का पठार कहाँ स्थित है ?

(क) केन्या

(ख) ऑस्ट्रेलिया

(ग) भारत ।

4. यांगत्से नदी कहां बहती है?

(क) दक्षिणी अमेरिका

(ख) ऑस्ट्रेलिया

(ग) चीन।

5. यूरोप की एक महत्त्वपूर्ण पर्वत श्रृंखला कौन-सी है ?

(क) ऐंडीज

(ख) आल्पस

(ग) रोकना ।

उत्तर –

1. (क) ऊंचाई।
2. (क) पर्वतों में।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

3. (ग) भारत ।
4. (ग) चीन।
5. (ख) आल्पस ।

प्रश्न 3 खाली स्थान भरें-

(i) समतल भूमि वाले विस्तृत क्षेत्र को........ कहते हैं ।

(ii) हिमालय एवं आल्पस .... पर्वतों के उदाहरण है ।

(iii) ....क्षेत्रों में खनिजों की प्रचुरता होती है ।

(iv) .... पर्वतों का एक क्रम है।

(v) .... क्षेत्र कृषि के लिए सबसे अधिक उत्पादक क्षेत्र होते हैं ।

उत्तर –

(i) मैदान (ii) वलित (iii) पठारी (iv) पर्वत श्रृंखला (v) मैदानी।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)